What will I write 13

What will I write?
I've been thinking for a long time.
It’s midnight, I’m half-lying on the bed.
Mountains of gibberish imaginations
Are overflowing my brain.
I’m thinking of writing about the college life,
Chit chats of the canteen?
Or about my mother?
Nowadays mum doesn’t smile at all
Doesn’t even talk much
She’s touching seventy
Takes sixteen to seventeen medicines a day-
That morning in the drawing room,
I sat beside mum,
“How are you mother?”
“Listen, let me tell you something…
So many things happen in our life,
Can’t God do something like
Everybody will be as they are
No birth, no death!
It would’ve been great then, wouldn't it?”
I stared at mum’s face
For a long time.
What will I write?

I’m thinking of writing about
The parents of my neighbour Dilip brother.
Both of them used to stay on the first floor.
Waking up early at 4 in the morning,
Uncle used to have a bath in cold water.
And with that his breaths used to be audible enough-
“What to do son, we don’t have a geyser
I need to start cooking at 6am;
Your aunt has become very weak!”
They didn’t have a geyser.
What will I write?

Aunty used to summon me whenever she saw me,
To take her to the doctor.
Their younger son was an established engineer.
He died due to road accident all of a sudden,
“Will you take me to a doctor, son?
Nobody takes me !”
I couldn’t respond to her
While going to the office. .
Today none of them exist.
Succumbed by a busy lifestyle,
I couldn’t stand beside an octogenarian lady.
What will I write?

While thinking, the night flows into dawn,
Sweet chirping of a couple of night birds,
I’m stuck on the bed
Amidst life and death.
College life, canteen, childhood, old parents,
Happiness, miseries - all are mixed up-
They hit me deep inside;
What will I write?
I have been thinking for the whole night.

কি লিখব ভাবছি? (13)

(53)

কি লিখব ভাবছি

ভোরের উঠোন থেকে।

বিছানায় জেগে শোয়া, আয়নাতে।

জানালা কুয়াশা ক্যালেন্ডার দরজায়

আমায় ডাকছে ঘড়িতে,

লিখব ভাবি অনেক নাটক, কাহিনিকে

ভাবনা নিয়ে দু চারখানির,

নাকি আমার মনের কথা?

আজকাল যা লোকেরা মানেন না

কেউই বিশেষ বলেন না,

সত্যি খুঁজে খুঁজে বেড়াই

দিলে ভালো সবকোটা ভূতুড়ে স্বপ্ন যা।

সেদিন সকালবেলায় প্রতিদিনের

(চুপ)

আমার পাশে বসেছি" ?

"কেমন আছো মা?

"শোন তোকে একটা কথা বলি.....

এত কিছু হতো জীবনে

জীবন এমন কিছু ~~করে~~ করতে পারেনা....

যে যেখানে যেমন আছে তেমনই থাকবে

কারো জন্ম নেই, কারো মৃত্যুও নেই!

তাহলে খুব ভালো হতো বল?"

আমি আমার মুখের ~~দিকে~~ দিকে

তাকিয়ে ছিলাম অনেকক্ষণ।

কি লিখব আমি?

লিখব বসেছি পাশেই বসেই

নিস্তব্ধতায় বল আমার কথা ?

আপনারা এখন কোথায় থাকেন ?

[illegible] গঙ্গায় ডুবে দীর্ঘ জলে

স্নান করতেন যেই

আর [illegible] আগে [illegible] [illegible] [illegible] ?

এ কি মানুষ না জিজ্ঞাসা নাই

আমার দুটো [illegible] রান্না হয় রোজ ??

কেন [illegible] [illegible], পারে না।

জিজ্ঞাসা ছিল না তোমার!

কি লিখব আমি ?

[illegible] আমাকে শেখাতেই চাইতেন

তাহলে শেখাতে নিয়ে যাবেন কেন।

ছোটো ছেলে [illegible] [illegible] ছিল

হঠাৎ [illegible] [illegible] আসা যায় ?

(১৬)

"আমাকে একটা জায়গা দেখাতে নিয়ে যাবি?
'কেউ তো নেয় না আমায়!"
অথচ যখন সময়
ওকে তাকে সাথে নিতে পারিনি,
আর ফিরেনি সেই,
জীবনের প্রত্যয় এক অনিশ্চিতের
ইচ্ছার পাশে দাঁড়াতে পারিনি।
কি নিষ্ঠুর আমি?
ভাবতে ভাবতে ওত আড়ালে চলে গেছে নিজে
একটা হঠাৎ অজানা পাখির মিষ্টি ডাকে,
নিরালায় জীবন মৃত্যুর সন্ধানে
আটকে আছি আমি
কর্মের লাইফ, অ্যাডমিশন, শৈশব, ইচ্ছা আর মন,

57

অনন্ত কেমন অলকেশ পাঠিয়ে

ঝাটকু গেং বেচেং বেভেঙ

কি লিখব আমি

ভেবে পেলাম না খুঁজে

क्या लिखूं मैं (13)

क्या लिखूं मैं?

तब से सोच रहा हूँ,

बिस्तर पर आधे लेटे हुए,

आधी रात का समय है,

सिर पर आकाश पाताल,कल्पनाओं के पहाड़

मानो टूट पड़ रहे हैं ,

सोच रहा हूँ,

कॉलेज लाइफ,कैंटीन,गप्पे-शप्पों को लेकर,

दो चार लाइन लिखूं ,

या अपनी माँ की बात लिखूं ?

आजकल माँ एकदम ही नहीं हँसती,

बात भी कुछ खास नहीं करती,

लगभग सत्तर के आसपास उम्र है उनकी ,

दिन में कम से कम सत्रह दवाइयां लेती हैं ,

उसदिन सुबह-सुबह ड्राइंग रूम में माँ के साथ बैठा हुआ था,

"माँ,कैसी हो ?"

"सुन,तुझसे एक बात कहती हूँ,......

जिंदगी में इतना कुछ होता है,

क्या भगवन ऐसा कुछ नहीं कर पाते,

जिससे कि जो जहाँ है वही पे रह जाए,

न कोई जन्म होता,न कोई मरण,

तब बहुत ही अच्छा होता न ?

मैं बहुत देर तक,

माँ की ओर देखता रहा,

क्या लिखूं मैं?

सोच रहा हूँ,

पड़ोस वाले घर के दिलीप भैया के माँ -बाप को लेकर लिखूं,

वे दोनो दूसरे मंज़िल में रहते थे,

मौसाजी प्रातः चार बजे उठकर ,

ठन्डे पानी से नहाते थे,

उनके नहाने के साथ-साथ साँसों की आवाज़ सुनाई पड़ती थी,

"क्या करूँ भाईसाहब!गीज़र नहीं है।

फिर छः बजते ही खाने का बंदोबस्त करता हूँ ,

"तुम्हारी मौसी कमज़ोर है,नहीं कर सकती !"

उनलोगों का गीज़र नहीं था,

क्या लिखूं मैं ?

मौसी मुझे देखते ही पुकारती थी,

डॉक्टर के पास ले जाने के लिए कहती थी,

छोटा बेटा बड़ा इंजीनियर था,

अचानक रोड एक्सीडेंट से मर गया।

"मुझे एक डॉक्टर के पास ले चलोगे ?

कोई तो नहीं लेकर जाता !"

ऑफिस जाते वक्त,

उनकी पुकार सुन न सका,

आज दोनों में से कोई भी नहीं है,

जीवन की तमाम व्यस्तताओं के कारण,

एक वृद्धा के साथ मैं नहीं खड़ा हो पाया,

क्या लिखूं मैं ?

सोचते सोचते रात प्रातः की ओर बढ़ती जाती है,
एक दो रात के पक्षियों की मधुर पुकार,
बिस्तर पर जिंदगी और मौत के बीच लटकता हुआ मैं ,
कॉलेज लाइफ,कैंटीन,बचपन,बूढे माँ -बाप,
हर्ष - विषाद आपस में घुलमिलकर
पेट में तकलीफ पैदा करते हैं,
क्या लिखूं मैं ,?
सारी रात यही सोचता रहता हूँ।